रीजॉइस लर्निंग सेंटर
लेखक: मिरियम लिवेल, रीजॉइस कॉर्पस क्रिस्टी, यूएसए

अनुवादक: प्रदीप मसीह, उत्तर भारत

www.rejoicecc.org

पाठ **3:** विश्वास करना आज्ञा मानना है

आज हम चर्चा करेंगे**:**

1. विश्वास करना आज्ञा मानना क्यों है?

2. यीशु प्रभु हैं। क्या आप अपने मालिक की आज्ञा मान रहे हैं?

3. बाइबल में आज्ञाकारी लोग।

4. बाइबल में अवज्ञाकारी लोग।
विराम

5. यीशु ने चेतावनी दी: जो लोग अवज्ञाकारी हैं, वे उसके राज्य के वारिस नहीं होंगे।

6. पवित्रशास्त्र में उल्लिखित विभिन्न प्रकार के विश्वास।

7. आज्ञाकारी होने के लिए क्या आवश्यक है?

8. आज्ञा मानने के परिणाम।

हम सीखते हैं: जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तो हम सिद्ध करते हैं कि हम उससे प्रेम करते हैं। उसके राज्य में प्रवेश करने के लिए आज्ञापालन अनिवार्य है।

1. विश्वास करना आज्ञा मानना क्यों है?

मत्ती **22:37-38**
यीशु ने उत्तर दिया: "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। यही पहला और महान आज्ञा है।"

<u>हमें परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा दी गई है। लेकिन हम उससे प्रेम कैसे कर सकते हैं?</u>

यीशु ने कहा:
यूहन्ना **14:15** "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानो।"

यूहन्ना **14:23** "यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन का पालन करेगा; और मेरा पिता उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएंगे और उसके साथ निवास करेंगे।"

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर यूहन्ना ने लिखा:
1 यूहन्ना **5:3** "वास्तव में, परमेश्वर से प्रेम यही है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें। और उसकी आज्ञाएँ कठिन नहीं हैं।"

मूसा, मरियम और स्वयं परमेश्वर पिता ने कहा कि हमें जो कुछ यीशु कहते हैं, उसे करना चाहिए—हमें उनकी सुननी चाहिए।

हम प्रभु की आज्ञा इसलिए मानते हैं क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं।

1 यूहन्ना **4:19** "हम उससे प्रेम रखते हैं क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया।"

2. यीशु प्रभु हैं: क्या आप अपने मालिक की आज्ञा मान रहे हैं?

बुद्धिमान और मूर्ख निर्माणकर्ता: सच्चा विश्वास आज्ञापालन है

मत्ती **7:24-27**
24 “इसलिए जो कोई मेरे इन वचनों को सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।
25 बारिश हुई, बाढ़ आई, और आँधी चली और उस घर पर टकराई; फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर थी।
26 लेकिन जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया।
27 बारिश हुई, बाढ़ आई, और आँधी चली और उस घर से टकराई, और वह बड़े धमाके के साथ गिर गया।”

इफिसियों **2:10**

"क्योंकि हम उसी की कृति हैं, जो मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया कि हम उनमें चलें।"

फिलिप्पियों **2:12-13**
12 इसलिए, मेरे प्रिय मित्रों, जैसे तुम सदा आज्ञा मानते आए हो—न केवल मेरी उपस्थिति में बल्कि अब मेरी अनुपस्थिति में और भी अधिक—डर और काँपते हुए अपने उद्धार की प्रक्रिया को पूरा करो,
13 क्योंकि यह परमेश्वर ही है जो तुम्हारे भीतर अपनी इच्छा और योजना को पूरा करने के लिए कार्य करता है।

---

3. बाइबल में आज्ञाकारी लोग

यीशु ने इस संसार में रहते हुए आज्ञापालन का आदर्श प्रस्तुत किया।

यूहन्ना **12:49-50**
यीशु ने कहा:
49 "मैंने अपनी ओर से नहीं कहा, बल्कि पिता जिसने मुझे भेजा, उसने मुझे आज्ञा दी कि मैं क्या कहूँ और क्या बोलूँ।
50 मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन देती है। इसलिए जो कुछ मैं कहता हूँ, वह वही है जो पिता ने मुझे कहा है।"

➔ वह पवित्र आत्मा से निर्देशित थे और आत्मा की आज्ञा का पालन करते थे।
उन्होंने स्वयं को पूर्ण रूप से पिता की इच्छा के अधीन कर दिया।

फिलिप्पियों 2:8
"...उसने अपने आप को दीन किया और यहाँ तक कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बना।"

क्या यीशु के लिए आज्ञापालन आसान था?

गथसमनी के बगीचे में ऐसा नहीं था:

मत्ती **26:38**
यीशु ने दुःख और संकट का अनुभव किया। तब उसने अपने चेलों से कहा, "मेरा मन बहुत ही उदास है, यहाँ तक कि मृत्यु तक।"

मत्ती **26:39**
"हे मेरे पिता, यदि संभव हो, तो यह कटोरा मुझसे टल जाए; फिर भी, मेरी इच्छा नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।"

इब्रानियों **5:8-9**
"यद्यपि वह पुत्र था, तौभी उसने दुःख उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध किए जाने के बाद, वह उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा मानते हैं, अनन्त उद्धार का कर्ता बन गया।"

➔ यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा चलाए गए थे, और जब हम नए जन्म में आते हैं, तो हमें भी पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलना चाहिए।

अब्राहम, विश्वास के पिता, ने विश्वास किया और आज्ञा मानी

उत्पत्ति **12:1-4**
1 यहोवा ने अब्राम से कहा: "अपने देश, अपने कुटुंब और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में जा जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।
2 मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा और तुझे आशीष दूँगा; मैं तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का कारण बनेगा।
3 जो तुझे आशीष देंगे, मैं उन्हें आशीष दूँगा, और जो तुझे शाप देंगे, मैं उन्हें शाप दूँगा। पृथ्वी के सभी कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"
4 अब्राम यहोवा की आज्ञा अनुसार चला, और लूत भी उसके साथ गया।

उत्पत्ति **22:1-18 –** परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की परीक्षा ली

2 तब परमेश्वर ने कहा: "अपने पुत्र इसहाक को, जो तेरा इकलौता और प्रिय है, लेकर मोरिय्याह देश में जा, और उसे वहाँ एक पहाड़ी पर होमबलि के रूप में अर्पित कर, जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।"

इब्रानियों **11:17-19**

अब्राहम ने आज्ञा मानी, यह विश्वास करते हुए कि यदि आवश्यक हुआ तो परमेश्वर इसहाक को मृतकों में से भी जिला सकता है।

यहोशू ने अपने जीवनभर विश्वास और आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया
यहोशू **6:3-5** में, हम उसकी आज्ञाकारिता का एक उदाहरण देखते हैं। प्रभु ने उससे कहा:
3 "तू अपने सभी सशस्त्र पुरुषों के साथ नगर की एक बार परिक्रमा कर; छह दिन तक ऐसा ही कर।
4 सात याजकों को मेढ़ों के सींगों की तुरहियाँ लेकर सन्दूक के आगे आगे चलना होगा। सातवें दिन नगर के चारों ओर सात बार परिक्रमा करना, और याजकों को तुरहियाँ फूँकनी होंगी।
5 जब वे तुरहियों को लम्बे समय तक फूँकेंगे और तुम उसकी आवाज़ सुनोगे, तब सारी सेना ऊँचे स्वर में जयजयकार करेगी; तब नगर की दीवार गिर जाएगी और प्रत्येक व्यक्ति सीधे नगर में प्रवेश करेगा।"

➔ यहोशू ने आज्ञा मानी, और उसकी आज्ञाकारिता ने उसे एक चमत्कारी विजय दिलाई।

नूह की कहानी (उत्पत्ति **6-9**)

उत्पत्ति **6:9**
"नूह एक धर्मी व्यक्ति था**,** अपने समय के लोगों में निष्कलंक था**,** और वह परमेश्वर के साथ चलता था।**"**

उत्पत्ति **6:12-15**
12 परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी पूरी तरह भ्रष्ट हो गई थी, क्योंकि सब लोग पथभ्रष्ट हो गए थे।
13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, "मैं पृथ्वी के सभी लोगों का अंत करने जा रहा हूँ, क्योंकि यह हिंसा से भर गई है। मैं मनुष्यों सहित पृथ्वी का नाश करने जा रहा हूँ।
14 तू अपने लिए सनोबर की लकड़ी से एक जहाज बना, उसमें अलग-अलग कमरे बनाना और उसे भीतर और बाहर से तारकोल से लीपना।
15 उसे इस प्रकार बनाना: (फिर परमेश्वर ने विस्तार से निर्देश दिए)।

उत्पत्ति **6:22**
"नूह ने वह सब किया, जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी।"

इब्रानियों **11:7**
"विश्वास से, नूह ने उस बात के विषय में जो अभी दिखाई नहीं दी थी, परमेश्वर की चेतावनी पाकर श्रद्धा के साथ एक जहाज बनाया, जिससे उसके घराने का उद्धार हुआ। इस तरह उसने संसार को दोषी ठहराया और उस धर्म का वारिस बना जो विश्वास के द्वारा होता है।"

गिदोन आज्ञाकारी था और उसने रात के अंधेरे में मूर्तियों को गिरा दिया

न्यायियों **6:25-32**
25 उसी रात यहोवा ने गिदोन से कहा, "अपने पिता के बैल और सात साल के दूसरे बैल को ले, और अपने पिता की बाल की वेदी को गिरा दे, तथा उसके पास खड़े अशेरा खंभे (कनानी उर्वरता देवी का प्रतीक) को काट डाल।
26 फिर इस ऊँचे स्थान पर पत्थरों को उचित क्रम में रखकर अपने परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना, और उस पर दूसरे बैल को होमबलि के रूप में चढ़ा, अशेरा मूर्ति की लकड़ी को जलाने के लिए उपयोग कर।"
27 तो गिदोन ने अपने दस सेवकों को लिया और यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया। लेकिन गिदोन अपने परिवार और नगर के लोगों से डरता था**,** इसलिए उसने यह कार्य दिन में नहीं**,** बल्कि रात में किया।

दाऊद ने यहोवा से मार्गदर्शन माँगा और आज्ञा मानी

1 शमूएल **30:8-9**

दाऊद ने यहोवा से पूछा कि क्या उसे अमालेकियों का पीछा करना चाहिए, जिन्होंने उसके नगर पर हमला किया था।
यहोवा ने उसे आज्ञा दी कि वह उनका पीछा करे और विजय की गारंटी दी।

प्रेरितों ने आज्ञाकारिता को समझा

धार्मिक अधिकारियों ने प्रेरितों को यीशु के नाम में प्रचार करने से मना किया।

प्रेरितों के काम **5:29**
पतरस और अन्य प्रेरितों ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:
"हम मनुष्यों की नहीं, बल्कि परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए।"

रोमियों **1:5**
पौलुस ने कहा कि उसे अनुग्रह और प्रेरिताई इस उद्देश्य से मिली कि "वह सभी जातियों को उस आज्ञाकारिता के लिए बुलाए, जो विश्वास से उत्पन्न होती है, और यह सब मसीह के नाम की महिमा के लिए है।"

1 यूहन्ना **2:3-4**
यूहन्ना ने लिखा:
"इसी से हम जानते हैं कि हमने उसे पहचाना है, यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। जो कहता है, 'मैं उसे जानता हूँ,' परन्तु उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं है।"

---

4. बाइबल में अवज्ञाकारी लोग

आदम और हव्वा शैतान के द्वारा धोखा खा गए

उत्पत्ति 2
परमेश्वर ने आदम को आज्ञा दी थी कि वह "उद्यान के किसी भी वृक्ष का फल खा सकता है, लेकिन भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाए।"

उत्पत्ति **3:9-12**
9 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम से पुकारकर कहा, "तू कहाँ है?"
10 आदम ने उत्तर दिया, "मैंने तेरा शब्द उद्यान में सुना और मैं डर गया, क्योंकि मैं नग्न था; इसलिए मैंने अपने आपको छिपा लिया।"
11 तब परमेश्वर ने कहा, **"**तुझे किसने बताया कि तू नग्न है**?** क्या तूने उस वृक्ष का फल खाया जिससे खाने के लिए मैंने तुझे मना किया था**?"**
12 आदम ने उत्तर दिया, "जो स्त्री तूने मेरे साथ रहने को दी, उसी ने मुझे उस वृक्ष का फल दिया और मैंने खा लिया।"

इस्राएल विद्रोही और अविश्वासी था

इस्राएल का इतिहास अविश्वास के विरुद्ध एक चेतावनी के रूप में कार्य करता है।
हालाँकि उन्होंने मिस्र से परमेश्वर की चमत्कारी मुक्ति देखी, फिर भी कई इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और वे नष्ट हो गए।

मरुभूमि की पीढ़ी **(**गिनती **14:26-35)**

मिस्र से चमत्कारी रूप से छुड़ाए जाने के बाद, इस्राएलियों ने परमेश्वर और मूसा पर भरोसा करने से इनकार कर दिया।
वे केवल दो विश्वासयोग्य व्यक्तियों—यहोशू और कालेब—के भी विरोधी हो गए।

परिणाम: वे प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश करने के बजाय मरुभूमि में मर गए।

गिनती **14:20-23**
20 यहोवा ने उत्तर दिया: …21 "मेरे जीवन की शपथ और यहोवा की महिमा की शपथ, जो संपूर्ण पृथ्वी को भरती है,
22 उन सभी लोगों में से जिन्होंने मिस्र और मरुभूमि में मेरे चमत्कार देखे और फिर भी दस बार मेरी परीक्षा ली और मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया,
23 उनमें से कोई भी उस देश को नहीं देखेगा, जिसकी मैंने उनके पूर्वजों से शपथ ली थी। जिन्होंने मुझे तुच्छ जाना, वे उसे कभी नहीं देखेंगे।**"**

न्यायियों का समय (न्यायियों 2:10-23)

न्यायियों की पुस्तक दर्शाती है कि इस्राएली बार-बार परमेश्वर से फिरकर मूर्तिपूजा में पड़ जाते थे।
इसका परिणाम उनकी हार के रूप में सामने आता था। जब वे पश्चाताप करते, तो परमेश्वर उन्हें छुड़ाता,
लेकिन उनकी अवज्ञा का यह चक्र उनके जीवन को कठिन बना देता था।

राजाओं का समय: इस्राएल और यहूदा का पतन

लगभग 40 राजाओं में से केवल 8 ही अच्छे थे।
भविष्यद्वक्ताओं की अनेक चेतावनियों के बावजूद,

उत्तर राज्य इस्राएल और दक्षिण राज्य यहूदा दोनों ही मूर्तिपूजा और परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना में पड़ गए।

परिणाम:

इस्राएल को 722 ईसा पूर्व में अश्शूरियों द्वारा नष्ट कर दिया गया।

यहूदा को 586 ईसा पूर्व में बाबुलियों द्वारा बंदी बना लिया गया।

(2 राजा 17:7-23, 2 इतिहास 36:15-21)

इस्राएल का इतिहास हमें सिखाता है कि अवज्ञा विनाश की ओर ले जाती है।

लूत की पत्नी ने अवज्ञा की और पीछे मुड़कर देखा

उत्पत्ति **19:15**
प्रभात के समय स्वर्गदूतों ने लूत से कहा, "शीघ्र करो! अपनी पत्नी और अपनी दोनों बेटियों को यहाँ से ले जाओ, वरना तुम इस नगर के दंड में समा जाओगे।"
(उन्हें आज्ञा दी गई थी कि वे पीछे न देखें।)

उत्पत्ति 19:26
"परन्तु लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर देखा, और वह नमक का खंभा बन गई।**"**

राजा शाऊल**:** अधूरी आज्ञाकारिता भी अवज्ञा है

राजा शाऊल को आज्ञा दी गई थी कि वह अमालेकियों को पूरी तरह नष्ट कर दे,
लेकिन उसने राजा अगाग और सबसे अच्छी पशु-संपत्ति को जीवित रखा।
उसने अपनी अवज्ञा को यह कहकर सही ठहराने की कोशिश की कि वह उन्हें परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के लिए रख रहा था।

1 शमूएल **15:22-23**

"और शमूएल ने कहा, 'क्या यहोवा होमबलियों और अन्य बलिदानों से उतना ही प्रसन्न होता है जितना कि यहोवा की बात मानने से? सुनो, आज्ञाकारिता बलिदान से उत्तम है, और ध्यान देना मेंढ़ों की चर्बी से उत्तम है।
क्योंकि विद्रोह जादू टोने के पाप के समान है, और हठधर्मिता अधर्म और मूर्तिपूजा के समान है।
इसलिए कि **तूने यहोवा के वचन को तुच्छ जाना**, उसने भी तुझे राजा होने से तुच्छ जाना।'**"**

हनन्याह और सप्फीरा: प्रेरितों के काम **5**

हनन्याह और सप्फीरा ने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और अपनी संपत्ति की बिक्री से प्राप्त लाभ के बारे में धोखा दिया।
परिणाम: वे तुरंत मर गए।

यह अवज्ञा का कार्य प्रारंभिक कलीसिया के लिए एक कठोर चेतावनी थी कि पाप को हल्के में नहीं लिया जा सकता। इस त्वरित न्याय के द्वारा परमेश्वर का भय कलीसिया में स्थापित हुआ।

कुरिन्थुस की कलीसिया ने अनैतिकता और मूर्तिपूजा की

1 कुरिन्थियों **10:21**
पौलुस ने कहा: "तुम प्रभु के कटोरे में सहभागी होकर दुष्टात्माओं की मेज में सहभागी नहीं हो सकते।"

1 कुरिन्थियों **6:9-10**
"कोई भी व्यभिचारी या मूर्तिपूजक परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं होगा।**"**

तीतुस **1:16**
वे लोग (जो मनुष्यों की परंपराओं या नियमों का पालन करते हैं, या जो सत्य को अस्वीकार करते हैं) यह दावा करते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, लेकिन अपने कर्मों से वे उसे अस्वीकार करते हैं। वे घृणित, अवज्ञाकारी और किसी भी अच्छे कार्य के लिए अयोग्य हैं।

---

5. यीशु की चेतावनी: अवज्ञाकारी उसके राज्य के वारिस नहीं होंगे

सेवकों के लिए चेतावनी**:** मत्ती **7:21-23**

(यीशु ने कहा**)**
"हर कोई जो मुझसे कहता है, 'प्रभु, प्रभु,' वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परंतु केवल वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है।
उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, 'प्रभु, प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? तेरे नाम से बहुत से अद्भुत काम नहीं किए?'
तब मैं उनसे कहूँगा, 'मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना; दूर हो जाओ मुझसे, हे अधर्म के काम करनेवालों!'"

मत्ती **25:14-30 –** प्रतिभाओं की दृष्टांत

एक स्वामी ने अपने दासों को प्रतिभाएँ (टैलेंट्स) दीं।
दो दासों ने अपनी प्रतिभाओं को बढ़ाया, परंतु एक दास ने कुछ भी नहीं किया।

उस आलसी दास ने कहा:
"मैं डर गया, इसलिए मैंने आपकी प्रतिभा को ज़मीन में छिपा दिया। देखिए, यह वही है जो आपका था।"

"उसके स्वामी ने उत्तर दिया, 'हे दुष्ट और आलसी दास!...'"

"और उस निकम्मे दास को बाहर के अंधकार में डाल दो, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।"

सभी बच्चों के लिए चेतावनी**:** लूका **13:22-27**

22 फिर यीशु नगर-नगर और गाँव-गाँव जाकर उपदेश देता हुआ यरूशलेम की ओर बढ़ रहा था।
23 किसी ने उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या केवल थोड़े लोग उद्धार पाएँगे?"
24 उसने उत्तर दिया, "संकरी द्वार से प्रवेश करने का भरसक प्रयास करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत से लोग प्रवेश करने का प्रयास करेंगे, परंतु वे नहीं कर पाएँगे।
25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार बंद कर देगा, तो तुम बाहर खड़े होकर दरवाजा खटखटाओगे और विनती करोगे, 'हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोलो।'
परंतु वह उत्तर देगा, 'मैं तुमको नहीं जानता और न ही यह जानता हूँ कि तुम कहाँ से आए हो।'
26 तब तुम कहोगे**, '**हमने तेरे साथ खाया**-**पीया**,** और तूने हमारी गलियों में शिक्षा दी।**'**
27 लेकिन वह फिर उत्तर देगा, 'मैं तुमको नहीं जानता कि तुम कहाँ से आए हो। हे अधर्म करनेवालो, मुझसे दूर हो जाओ!'"

---

6. शास्त्र में उल्लिखित विभिन्न प्रकार के विश्वास

1. मृत विश्वास **(Dead Faith)**

याकूब **2:17** – "वैसे ही, यदि विश्वास के साथ कर्म नहीं हैं, तो वह अपने आप में मरा हुआ है।"

2. दुष्टात्माओं का विश्वास **(Demonic Faith)**

याकूब **2:19** – "तुम यह विश्वास करते हो कि एक ही परमेश्वर है? अच्छा करते हो! दुष्टात्माएँ भी यह विश्वास करती हैं और काँपती हैं।"
(दुष्टात्माओं का विश्वास केवल बौद्धिक विश्वास होता है, जो उद्धार नहीं देता।)

3. व्यर्थ विश्वास **(Vain Faith)**

मत्ती **7:21-23** – "हर कोई जो मुझसे कहता है, 'हे प्रभु, हे प्रभु,' वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परंतु केवल वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा को पूरा करता है।"

4. उद्धार करनेवाला विश्वास **(Saving Faith)**

1 पतरस 1:8-9 – "तुमने उसे नहीं देखा, फिर भी तुम उससे प्रेम करते हो; और अब भी, जब तुम उसे नहीं देखते, फिर भी उस पर विश्वास करते हो और एक अवर्णनीय और महिमामय आनंद से भर जाते हो,
9 क्योंकि तुम्हें अपने विश्वास का अंतिम परिणाम **–** अपने प्राणों का उद्धार **–** मिल रहा है।**"**

7. आज्ञाकारी होने के लिए क्या आवश्यक है**?**

7.1. परमेश्वर का वचन

परमेश्वर का वचन हमें उसकी इच्छा और मार्गों के बारे में जानकारी देता है। उसकी योजनाएँ हमारी योजनाओं से ऊँची हैं। नीतिवचन में हमें अपनी समझ पर निर्भर न रहने की आज्ञा दी गई है। हमें अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर के वचन के अधीन कर देना चाहिए और उस पर भरोसा करना चाहिए।
परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलने के लिए, हमें वचन का अध्ययन करना, उस पर मनन करना और उसे अपने जीवन में लागू करना चाहिए।

याकूब **1:22** – "केवल वचन के श्रोता न बनो, बल्कि उसके कर्ता बनो, अन्यथा तुम स्वयं को धोखा दोगे।"

2 तीमुथियुस **3:16-17** – "हर एक शास्त्र जो परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है, वह शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धर्म में प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है, ताकि परमेश्वर का जन हर भले काम के लिए सिद्ध और तत्पर हो।"

रोमियों **12:2** – "इस संसार के स्वरूप में न ढल जाओ, बल्कि अपनी बुद्धि के नए होने से रूपांतरित होते जाओ, जिससे तुम परख सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है—अर्थात उत्तम, प्रसन्न करने योग्य और सिद्ध इच्छा।"

7.2. पवित्र आत्मा की शक्ति

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना हमारे अपने बल से संभव नहीं है। हमारा शारीरिक स्वभाव दुर्बल है, और मसीह के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:5)। इसलिए, परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया है, जो हमें आज्ञाकारिता का जीवन जीने की शक्ति प्रदान करता है।

रोमियों **8:13-14** – "यदि तुम शरीर के अनुसार जीवित रहोगे तो मरोगे, पर यदि आत्मा के द्वारा शरीर के कामों को मार डालोगे तो जीवित रहोगे। क्योंकि जितने परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।"

गलातियों **5:16** – "आत्मा के अनुसार चलो, और शरीर की लालसाओं को पूरा न करो।"

परमेश्वर की आज्ञा का पालन केवल नियमों को मानने की बात नहीं है, बल्कि यह विश्वास का कार्य भी है। हमें अपनी समझ पर भरोसा करने के बजाय, पवित्र आत्मा की आवाज़ को सुनना चाहिए।

नीतिवचन **3:5-6 –** "अपने सम्पूर्ण हृदय से यहोवा पर भरोसा रख, और अपनी समझ पर भरोसा न कर। अपनी सारी बातों में उसे स्मरण कर, और वह तेरे मार्ग को सीधा करेगा।"

8. आज्ञाकारिता के परिणाम

1. हमारा चरित्र अच्छा बनता है: आत्मा का फल

गलातियों **5:22-23** – "पर आत्मा का फल है: प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, कृपा, भलाई, विश्वास, कोमलता और आत्म-संयम। ऐसे गुणों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है।"

---

2. हमारे अच्छे कर्म होते हैं

इफिसियों **2:10** – "क्योंकि हम परमेश्वर की कृति हैं, जो मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही हमारे करने के लिए तैयार किया था।"

मत्ती **5:16** – "वैसे ही, तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके, कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।"

---

3. हमें शांति मिलती है

भजन संहिता **119:165** – "जो तेरी व्यवस्था से प्रेम रखते हैं, उनके लिए बड़ी शांति होती है, और कोई भी चीज़ उन्हें गिरा नहीं सकती।"

---

4. हम बहुत फल लाते हैं

यूहन्ना **15:5** – "यदि तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में, तो तुम बहुत फल लाओगे; क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

---

5. हमें आशीर्वाद मिलते हैं

व्यवस्थाविवरण **28:1-2** – "यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी रीति से आज्ञा मानो और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करो, तो वह तुम्हें पृथ्वी की सभी जातियों से ऊँचा करेगा। ये आशीषें तुम पर आएँगी और तुम्हारे साथ बनी रहेंगी, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा मानोगे।"

---

6. हमें उन्नति **(**प्रमोशन**)** मिलती है

मत्ती **25:23** – "उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत कुछ का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनंद में प्रवेश कर।'"

लूका **16:10** – "जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य रहेगा, और जो थोड़े में अन्यायी है, वह बहुत में भी अन्यायी रहेगा।"

---

7. हमें अनंत उद्धार मिलता है

इब्रानियों **5:8-10** – "यद्यपि वह पुत्र था, तो भी उसने दुख उठाकर आज्ञाकारिता सीखी, और सिद्ध बनकर, वह उन सब के लिए अनंत उद्धार का कारण बन गया जो उसकी आज्ञा मानते हैं। और परमेश्वर ने उसे मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक नियुक्त किया।"

मत्ती **24:13** – "परन्तु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, वही उद्धार पाएगा।"

हम पुरस्कार प्राप्त करते हैं

गलातियों **6:9** (पौलुस का कहना) – "हम अच्छे काम करते हुए थकें नहीं, क्योंकि उचित समय में हम पुरस्कार पाएंगे, यदि हम हार न मानें।"

जो लोग आज्ञाकारिता में बने रहते हैं और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करते हैं, उन्हें अंतिम पुरस्कार मिलेगा—मसीह के साथ अनंत जीवन।

हम एक मुकुट प्राप्त करते हैं**:** बाइबिल में पांच प्रकार के मुकुटों का उल्लेख किया गया है।

1. अविनाशी मुकुट **–** हम हमेशा के लिए राजा हैं।
1 कुरिन्थियों **9:24-25** – "क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में सभी दौड़ते हैं, परन्तु एक ही पुरस्कार प्राप्त करता है? तुम ऐसे दौड़ो कि वह पुरस्कार प्राप्त कर सको। और जो कोई पुरस्कार के लिए प्रतियोगिता करता है, वह सब बातों में संयमी रहता है। अब वे अविनाशी मुकुट पाने के लिए ऐसा करते हैं, पर हम अविनाशी मुकुट के लिए।"

---

2. आनंद का मुकुट **–** हम लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाते हैं।
1 थिस्सलुनीकियों **2:19** – "हमारा आशा, या आनंद, या आनंद का मुकुट क्या है? क्या वह तुम नहीं हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन पर उसके सामने उपस्थित रहोगे?"

---

3. धार्मिकता का मुकुट **–** अंत तक धार्मिकता से जीने के लिए।
2 तीमुथियुस **4:7-8** (पौलुस लिखते हैं) – "मैंने अच्छा संग्राम लड़ा है, मैंने दौड़ को पूरा किया है, मैंने विश्वास को बनाए रखा है। अब मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा है, जिसे प्रभु, धर्मी न्यायधीश उस दिन मुझे देगा।"

---

4. महिमा का मुकुट **–** यह कभी फीका नहीं पड़ेगा।
1 पतरस **5:4** – पीटर (प्राचीनों) को संबोधित कर रहा है।
"और जब प्रधान चरवाहा प्रकट होगा, तो तुम महिमा का मुकुट प्राप्त करोगे, जो कभी फीका नहीं पड़ेगा।"

---

5. जीवन का मुकुट **–** हम परमेश्वर से प्रेम **(**आज्ञा पालन**)** करते हैं।
प्रकाशितवाक्य **2:10** – "जो कुछ तुम भुगतने वाले हो, उसकी कोई भी बात से भयभीत न हो। सचमुच, शैतान तुम में से कुछ को कारागार में डालेगा, कि तुम परखें जाओ, और दस दिनों तक कष्ट सहोगे। मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहो, और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूंगा।"

याकूब **1:12 – "**याकूब हमें बताते हैं कि यह जीवन का मुकुट उन सभी के लिए है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। और आज हमने यह सीखा कि परमेश्वर से प्रेम करना इसका मतलब है कि हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं!"

और आज हमने सीखा कि परमेश्वर से प्रेम करना मतलब उसकी आज्ञा का पालन करना है!

हम एक वसीयत प्राप्त करते हैं।

1 पतरस **1:4** – "जो अविनाशी, अव्यभिचारी और जो कभी फीका नहीं पड़ने वाली वसीयत है, जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है।"